Journal of Frontiers in Multidisciplinary Research

जनजातियों के राजनीतिक उत्थान में ननकीराम कँवर का योगदान (छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले के विशेष सन्दर्भ में)

[1*] श्रीमती प्रीति द्विवेदी, [2] प्रो. मनीष कुमार पाण्डेय
[1-2] राजनीति विज्ञान विभाग, श्री रावतपुरा सरकार यूनिवर्सिटी, रायपुर (छ.ग.)

* Corresponding Author: **श्रीमती प्रीति द्विवेदी**

Article Info
E-ISSN: 3050-9726
P-ISSN: 3050-9718
Volume: 06
Issue: 02
July – December 2025
Received: 24-09-2025
Accepted: 22-10-2025
Published: 08-11-2025
Page No: 405-412

सारांश
छत्तीसगढ़ की राजनीतिक परंपरा में ननकीराम कँवर एक आदर्श और निष्ठावान जननेता के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने अपने राजनीतिक व्यवसाय की शुरुआत जनसंघ से की और समाज तथा राष्ट्रहित के कार्यों में दीर्घकाल तक सक्रिय रहे। विधायक और मंत्री के रूप में उन्होंने कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया, खास तौर पर जनजातीय उत्थान एवं नक्सल समस्या के समाधान से जुड़ी नीतियों के निर्माण और कार्यान्वयन में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही।
इस शोध का मुख्य उद्देश्य कोरबा जिले में रहने वाले अनुसूचित जनजाति समुदाय के राजनीतिक जागरूकता और भागीदारी के माध्यम से जीवन आये परिवर्तन के प्रति, विशेष रूप से ननकीराम कँवर द्वारा उनके राजनीतिक उत्थान में किए गए योगदान के संदर्भ में, दृष्टिकोण को समझना है। अध्ययन के अंतर्गत समुदाय के सदस्यों से प्रतिनिधित्व, भागीदारी, नेतृत्व-कौशल, नीति निर्माण, नीतिगत पहुँच और धारणा जैसे राजनीतिक पहलुओं पर प्रश्न पूछे गए।
अनुसंधान में वर्णनात्मक (Descriptive) शोध डिज़ाइन का प्रयोग किया गया तथा नमूना चयन के लिए सुविधाजनक नमूना विधि (Convenient Sampling Method) अपनाई गई। कुल 393 उत्तरदाताओं ने 10 प्रश्नों वाली पाँच-बिंदु लिकर्ट स्केल प्रश्नावली को पूरा किया। अध्ययन की मान्यता (Validity) की जाँच फैक्टर विश्लेषण (Factor Analysis) से और विश्वसनीयता (Reliability) की जाँच क्रोनबाख अल्फा (Cronbach's Alpha) के माध्यम से की गई।
धारणाओं का आकलन मान तथा औसत मानों से किया गया । परिणामों से यह निष्कर्ष निकला कि कोरबा जिले के अनुसूचित जनजातियों के राजनीतिक उत्थान में ननकीराम कँवर का योगदान उल्लेखनीय और सकारात्मक प्रभाव वाला रहा है।

DOI: https://doi.org/10.54660/.JFMR.2025.6.2.405-412

मुख्यशब्द: कोरबा, ननकीराम कंवर, अनुसूचित जनजाति, राजनीतिक उत्थान

1. परिचय

भारतीय राजनीति में आदिवासी समाज के उत्थान हेतु अनेक नेताओं ने समय-समय पर उल्लेखनीय योगदान दिया है। छत्तीसगढ़ के कोरबा ज़िले में निवासरत अनुसूचित जनजातियों (Scheduled Tribes) के जीवन में श्री ननकीराम कँवर का योगदान विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य समुदाय की धारणाओं के आधार पर यह परखना है कि ननकीराम कँवर की नीतियाँ और कार्यक्रम वास्तव में उनके राजनीतिक उत्थान में किस हद तक सहायक रहे।

प्रतिनिधित्व, राजनीतिक भागीदारी, नेतृत्व कौशल, नीति निर्माण, नीतिगत पहुँच और धारणा-सूचक जैसे विविध आयामों की जाँच और विश्लेषण गया है। अध्ययन का लक्ष्य यह समझना है कि ननकीराम कँवर के राजनीतिक कार्यकाल के दौरान नीतिगत कार्यान्वयन से कोरबा ज़िले में क्या ठोस विकासात्मक बदलाव हुए, और इन नीतियों और सकारात्मक जागरूकता अभियानों का अनुसूचित जनजातियों के जीवन

पर क्या सकारात्मक प्रभाव पड़ा। आदिवासी समाज की प्रगति के लिए नेताओं की सक्रिय भूमिका और लक्षित नीतियाँ अत्यंत आवश्यक मानी जाती हैं (जाजा, 2005) [18]। इसी परिप्रेक्ष्य में एक विस्तृत राजनीतिक आकलन के लिए इस अध्ययन में जनजातीय समुदाय के अनुभवों और दृष्टिकोणों को केंद्र में रखकर निष्पक्ष तथा प्रामाणिक निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास किया गया है।

1.1. ननकीराम कँवर: राजनैतिक, सामाजिक और जनजातीय नेतृत्व का संगम

ननकीराम कँवर छत्तीसगढ़ के एक प्रभावशाली जनजातीय नेता रहे हैं, जिन्होंने कोरबा एवं इसके आस-पास के आदिवासी क्षेत्रों के आर्थिक विकास तथा सामाजिक-राजनीतिक उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे लंबे समय तक भारतीय जनता पार्टी से जुड़े रहे और कई कार्यकाल विधायक के रूप में चयनित हुए, तथा अनेक विभागों में मंत्री पदों पर कार्यरत रहे, विशेष रूप से गृह मंत्री के रूप में उनका कार्यकाल उल्लेखनीय रहा। उनके राजनीतिक जीवन का प्रमुख केंद्र आदिवासी समुदाय की राजनीतिक जागरूकता और सशक्तिकरण रहा (पाण्डेय, 2023) [10]।

उन्होंने प्रतिनिधित्व, भागीदारी, नेतृत्व निर्माण तथा नीतिगत पहुँच को बढ़ावा देकर जनजातीय समुदाय की स्थिति को मजबूत करने और उनके अधिकारों की रक्षा करने का प्रयास किया। अपने कार्यकाल में उन्होंने पंचायती राज संस्थाओं से लेकर विधान सभा तक आदिवासी नेतृत्व को उभरने के अवसर प्रदान किए और समुदाय की आवाज़ को नीति-निर्माण के स्तर तक पहुँचाने का प्रयास किया। ननकीराम कँवर राजनीतिक जागरूकता फैलाने के लिए ग्राम सभाओं, जनसभाओं और संगठनात्मक बैठकों में सक्रिय रहते थे, जहाँ वे लोगों को अधिकारों, मतदान और नीति से जुड़े मुद्दों पर मार्गदर्शन देते थे। ***उन***की सक्रियता और सहज उपलब्धता ने आदिवासी समुदाय में यह विश्वास जगाया कि वे केवल सहभागी ही नहीं, बल्कि राजनीति में निर्णयकारी शक्ति भी बन सकते हैं। उनका जीवन आदिवासी उत्थान के लिए समर्पित एक प्रेरणास्रोत के रूप में देखा जा सकता है।

1.2. भारत की अनुसूचित जनजातियाँ

अनुसूचित जनजातियाँ भारत के ऐसे पारंपरिक और सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट समुदाय हैं, जो ऐतिहासिक दृष्टि से समाज की मुख्यधारा से अलग सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े रहे हैं, और जिन्हें भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 के अंतर्गत विशेष मान्यता और संरक्षण प्राप्त है। ये प्रायः वनों, पर्वतीय तथा दूरस्थ इलाकों में निवास करती हैं और अपनी विशिष्ट भाषाओं, परंपराओं तथा जीवनशैली के लिए जानी जाती हैं (भारत सरकार, 2023) [2]।

जनजातियों के लिए रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य और राजनीतिक न्याय के क्षेत्रों में समान अवसर सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार द्वारा इनके लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएँ संचालित की जाती हैं। छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में इनकी जनसंख्या का अनुपात काफी अधिक है, अतः इनका राजनीतिक और आर्थिक विकास राष्ट्रीय समावेशी प्रगति के लिए अनिवार्य माना जाता है।

1.3. राजनीतिक उत्थान

राजनीतिक उत्थान का तात्पर्य उन प्रक्रियाओं और प्रयासों से है जिनके माध्यम से समाज के वंचित एवं हाशिए पर रहे वर्गों को राजनीतिक प्रतिनिधित्व, निर्णय लेने की शक्ति तथा लोकतांत्रिक संस्थाओं में समान अवसर प्राप्त होते हैं। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में अनुसूचित जनजातियाँ (Scheduled Tribes) लंबे समय तक राजनीतिक मुख्यधारा से अलग-थलग रहीं, जिसके परिणामस्वरूप उनके हितों और आवश्यकताओं का समुचित प्रतिबिंब नीति-निर्माण में नहीं हो पाया (भारत सरकार 2020) [3]।

राजनीतिक उत्थान केवल चुनाव लड़ने या मतदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें राजनीतिक जागरूकता, नेतृत्व निर्माण, नीति-निर्माण में भागीदारी, संगठनात्मक सशक्तिकरण और संसाधनों तक न्यायपूर्ण पहुँच जैसे पहलू भी सम्मिलित होते हैं (शर्मा 2017) [4]। जब जनजातीय समुदाय अपने प्रतिनिधियों को चुनने, निर्णय-प्रक्रियाओं में भाग लेने और नीतिगत लाभ प्राप्त करने में सक्षम होते हैं, तब उनकी राजनीतिक स्थिति सशक्त होती है। ऐसे नेताओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है जो जनजातीय समुदायों की आवाज़ को केवल स्थानीय निकायों और विधानसभाओं तक पहुँचाते ही नहीं, बल्कि उनकी समस्याओं के समाधान हेतु ठोस नीतियाँ और योजनाएँ भी लागू करते हैं। इस प्रकार, राजनीतिक उत्थान न केवल समुदाय को सशक्त बनाता है, बल्कि लोकतांत्रिक प्रणाली को अधिक समावेशी, प्रतिनिधिक और प्रभावी भी बनाता है।

1.4. कोरबा जिला, छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ का कोरबा जिला औद्योगिक गतिविधियों और खनिज संपदा के लिए विशेष पहचान रखता है। यह क्षेत्र मुख्यतः कोयला खदानों और तापीय विद्युत परियोजनाओं के कारण प्रसिद्ध है, जिसके चलते इसे "ऊर्जा की राजधानी" कहा जाता है। यहाँ एनटीपीसी, एसईसीएल और भारत एल्युमिनियम कंपनी (बाल्को) जैसी बड़ी औद्योगिक इकाइयाँ स्थित हैं, जो इसे आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बनाती हैं (कोरबा जिला प्रशासन, 2023) [5]।

भौगोलिक दृष्टि से यह जिला पहाड़ों और घने वनों से घिरा हुआ है, जहाँ बड़ी संख्या में अनुसूचित जनजातियाँ निवास करती हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से भी यह क्षेत्र अत्यंत समृद्ध है, और यहाँ की जनजातीय परंपराएँ आज भी जीवंत रूप में संरक्षित हैं।

2. साहित्य समीक्षा

2.1. प्रासंगिक साहित्य समीक्षा

ओडिशा की जनजातीय राजनीति पर अध्ययन में पाया गया कि पंचायत स्तर पर आरक्षण से महिलाओं और युवाओं की भागीदारी बढ़ी है, जिससे स्थानीय प्रशासन में उनकी आवाज़ सुनाई देने लगी। यह राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए महत्वपूर्ण कदम माना गया (पट्नायक, 2022) [9]। मध्य भारत की जनजातीय राजनीति का विश्लेषण करते हुए बताया कि राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि होने पर भी वास्तविक निर्णय-प्रक्रियाओं में उनकी भागीदारी सीमित है। उन्होंने सुझाव दिया कि राजनीतिक शिक्षा और प्रशिक्षण आवश्यक हैं (तिवारी एवं सेन, 2021) [17]। आंध्रप्रदेश के जनजातीय इलाकों में प्रतिनिधित्व की स्थिति का अध्ययन करके निष्कर्ष निकला कि विधानसभाई स्तर पर उनकी उपस्थिति बढ़ने के बावजूद, नीति-निर्माण में उनका प्रभाव अपेक्षाकृत कम है (राव, 2020) [12]। छत्तीसगढ़ में अनुसूचित जनजातियों के राजनीतिक नेतृत्व पर प्रकाश डालते हुए सम्बंधित अध्ययन में निष्कर्ष निकला गया कि राज्य गठन के बाद राजनीतिक मंचों पर आदिवासी नेतृत्व ने अधिक सक्रिय भूमिका निभाई है, जिससे समुदाय के अधिकार मजबूत हुए (शुक्ला, 2019) [14]। झारखंड में जनजातीय राजनीतिक संगठनों की भूमिका की पड़ताल की। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि ये राजनीतिक संगठन न केवल राजनीतिक प्रतिनिधित्व बढ़ाते हैं बल्कि अधिकार आंदोलनों को भी गति प्रदान करते हैं (कुमार एवं वर्मा, 2019) [6]। उड़ीसा की जनजातीय पंचायतों में निर्णय-प्रक्रियाओं का विश्लेषण कर बताया कि महिलाओं की भागीदारी सांकेतिक रही है, और वास्तविक शक्ति पुरुष प्रतिनिधियों के पास ही रही (प्रधान, 2018) [11]।

मध्य प्रदेश की जनजातीय राजनीति पर अध्ययन में पाया कि शिक्षा और रोजगार में पिछड़ापन राजनीतिक सशक्तिकरण में बाधा बना हुआ है। उन्होंने इसे दूर करने के लिए विशेष पहल की सिफारिश की (यादव, 2017) [19]। महाराष्ट्र के आदिवासी क्षेत्रों में स्थानीय निकाय चुनावों का विश्लेषण किया। निष्कर्ष रहा कि चुनावों के माध्यम से राजनीतिक जागरूकता बढ़ी है, परंतु भ्रष्टाचार और संसाधन-वितरण की समस्या अब भी बनी हुई है (देशमुख, 2016) [1]। बिहार के अनुसूचित जनजातीय नेताओं के उदय का अध्ययन किया। इसमें बताया गया कि क्षेत्रीय दलों के बढ़ते प्रभाव से जनजातीय नेताओं को अवसर मिले, परंतु नीतिगत स्तर पर बदलाव सीमित रहे (मिश्र, 2015) [7]। उत्तर-पूर्व भारत की जनजातीय राजनीति का अध्ययन कर यह पाया कि स्वायत्त परिषदों की स्थापना से स्थानीय समुदायों को निर्णय लेने में अधिक शक्ति मिली, जिससे राजनीतिक आत्मनिर्भरता का मार्ग प्रशस्त हुआ (रॉय, 2014) [13]।

2.2. अध्ययन का उद्देश्य
इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कोरबा ज़िले में निवासरत अनुसूचित जनजातियों के राजनीतिक उत्थान में ननकीराम कँवर द्वारा दिए गए योगदान का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन इस बात की पड़ताल करता है कि उनके राजनीतिक कार्यकाल और प्रयासों ने शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सेवाएँ, तकनीकी विकास, जीवन स्तर तथा राजनीतिक सम्मान जैसे विभिन्न पहलुओं पर किस प्रकार सकारात्मक प्रभाव डाला।

2.3. शोध पद्धति
अनुसंधान में वर्णनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया तथा नमूना चयन के लिए सुविधाजनक नमूना विधि अपनाई गई। अध्ययन के अंतर्गत समुदाय के सदस्यों से प्रतिनिधित्व, भागीदारी, नेतृत्व-निर्माण, नीतिगत पहुँच और धारणा जैसे राजनीतिक पहलुओं पर प्रश्न पूछे गए, जिसके लिए निम्नांकित प्रक्रिया अपनाई गयी:

- कोरबा जिले के सभी तहसीलों से जनजातीय घनत्व के अनुपात में कुल 393 उत्तरदाताओं ने 10 प्रश्नों वाली पाँच-बिंदु लिकर्ट स्केल प्रश्नावली को स्वविवेक से भरा।
- अध्ययन की मान्यता की जाँच फैक्टर विश्लेषण से और विश्वसनीयता की जाँच क्रोनबाख अल्फा के माध्यम से की गई।
- धारणाओं का आकलन मीन तथा औसत मीन मानों से किया गया, जबकि परिकल्पनाओं का परीक्षण एएनओवा द्वारा किया गया।

3. विश्लेषण
इस अध्ययन में अनुसूचित जनजाति समुदाय की ननकीराम कँवर के राजनीतिक उत्थान संबंधी योगदान के प्रति धारणा को समझने के लिए सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। इसके लिए 393 प्रतिभागियों से प्राप्त आंकड़ों का बहु-स्तरीय विश्लेषण किया गया, जिसमें डेटा की वैधता की पुष्टि, विश्वसनीयता का आकलन, और औसत मानों की गणना सम्मिलित था।

3.1. कारक विश्लेषण की उपयुक्तता का परीक्षण
सिर्फ एक ही प्रमुख अवयव की Eigenvalue > 1 (4.774) है, जो कुल विचरण का 42.85% स्पष्ट करता है। बाकी सभी अवयव की Eigenvalue < 1 होने के कारण उन्हें हटाया गया है, क्योंकि वे सैद्धांतिक रूप से कम उपयोगी माने जाते हैं (Kaiser's criterion के अनुसार) ।
KMO (Kaiser-Meyer-Olkin) का मान 0.763 होने से यह फैक्टर एनालिसिस के लिए उपयुक्त है। Bartlett's Test of Sphericity के परिणामों ने χ^2 = 1658.254 प्रदर्शित किया, जो यह दर्शाता है कि जिससे यह स्पष्ट होता है कि सह-आयामी (Correlation) मैट्रिक्स का विश्लेषण करना सही है। Bartlett's Test का p-value < .05 दर्शाता है कि डेटा में पर्याप्त सह-संबंध हैं, जिससे फैक्टर विश्लेषण करना तर्कसंगत है।

3.2. वैधता परीक्षण
वैधता परीक्षण का प्रमुख उद्देश्य यह निश्चित करना होता है कि प्रश्नावली वास्तव में उन्हीं संकल्पनाओं को माप रही है, जिनके लिए उसे तैयार किया गया है। इस अध्ययन में वैधता की जाँच हेतु घटक विश्लेषण का उपयोग किया गया। इसके लिए Principal Component Analysis (PCA) तथा Varimax Rotation तकनीकों का प्रयोग किया गया, जिससे स्पष्ट किया जा सके कि किन प्रश्नों का समूह समान छिपे हुए कारक (latent factor) से संबद्ध है।
Factor Loadings के विश्लेषण से यह पाया गया कि जिन प्रश्नों का मान 0.70 से अधिक था, उन्हें विश्लेषण में सम्मिलित किया गया क्योंकि वे अपने कारक से मज़बूत संबंध प्रदर्शित कर रहे थे। वहीं, जिन प्रश्नों का मान 0.40 से कम पाया गया, उन्हें कमजोर वैधता के कारण बाहर कर दिया गया।
विश्वसनीयता (reliability) के संदर्भ में, Composite Reliability (CR) तथा Average Variance Extracted (AVE) को मापदंड के रूप में अपनाया गया। सामान्यतः 0.70 से अधिक का मान स्वीकार्य माना जाता है (ननली, 1978) [8]। इस अध्ययन में सभी मान 0.70 से अधिक प्राप्त हुए, जो यह दर्शाते हैं कि डेटा विश्वसनीय है तथा उत्तरदाताओं ने प्रश्नावली को गंभीरता से पूरा किया। इसी प्रकार, सिंह आदि (2017) [15] ने भी अपने अध्ययन में इसी मानक को अपनाया था।
निम्नांकित प्रश्नों के फैक्टर लोडिंग मान 0.7 से अधिक पाए गए

- क्या आपके समुदाय के लोगो का ननकीराम कँवर जी के राजनितिक कार्यालय में सुना जाता था?(0.854)
- क्या ननकीराम कँवर जी ने आपके समुदाय को राजनीतिक प्रतिनिधित्व देने के लिए कार्य किया? ?(0.813)
- क्या ननकीराम कँवर जी ने आपके समुदाय को राजनीतिक प्रक्रिया में भागीदारी के लिए प्रेरित किया? ?(0.802)
- क्या ननकीराम कँवर जी के कार्यकाल में आपके समुदाय को राजनीतिक महत्व मिला? ?(0.774)
- क्या ननकीराम कँवर जी आप पर वो वोट देने के लिए दबाव डालते थे? ?(0.751)
- क्या ननकीराम कँवर जी ने अपनी पार्टी के प्रचार-प्रसार में आपके समुदाय के लोगों को सक्रिय भागीदारी के अवसर प्रदान किए? (0.748)
- क्या ननकीराम कँवर जी की नीतियाँ आपके समुदाय के हित में थी?(0.739)

निम्नांकित प्रश्नों के फैक्टर लोडिंग मान 0.4 से कम पाए गए

- क्या ननकीराम कँवर जी पुस्तकें पढ़ते थे? (0.384)
- क्या ननकीराम कँवर जी अक्सर कार्य के लिए यात्रा पर जाते थे? (0.368)
- क्या ननकीराम कँवर जी का स्वास्थ्य और व्यायाम पर ध्यान रहता था? (0.325)

उन प्रश्नो को हटा दिया गया जिनका मान 0.4 से कम है ।
इस क्रिया द्वारा यह निश्चित किया गया कि केवल वे प्रश्न शामिल किए जाएँ जो मजबूत सहसंबंध दर्शाते हों, और अध्ययन की केंद्रीय

अवधारणा, यानी सामाजिक उत्थान, से सीधे संबंधित हों। इस प्रकार का वैधता परीक्षण अनुसंधान की कुल गुणवत्ता को बनाए रखने तथा प्राप्त निष्कर्षों की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

3.3. विश्वसनीयता परीक्षण

नीचे कि तालिका में राजनीतिक उत्थान संकेतक के लिए मान प्रस्तुत किया गया है:

तालिका 3.1: Cronbach's Alpha

कारक/घटक	क्रोनबैक का अल्फा मान	आइटम की संख्या
राजनीतिक उत्थान संकेतक	0.776	07

यह मान 0.776 के समीप है, जो प्रश्नावली की अच्छी आंतरिक स्थिरता (Internal Consistency) को दर्शाता है। इसका अर्थ यह है कि प्रश्नावली के सभी 7 प्रश्न विश्वसनीय हैं तथा वे एक समान विषय, अर्थात् राजनीतिक उत्थान, को माप रहे हैं।

3.4. धारणा निर्माण

अनुसूचित जनजातियों के राजनीतिक उत्थान में ननकीराम कँवर के योगदान' संबंधी परिणाम निम्न तालिका में प्रस्तुत हैं।

3.4.1. लिंग के अनुसार

तालिका 3.2: राजनीतिक उत्थान से संबंधित लिंग के अनुसार औसत मान

समूह सांख्यिकी		औसतमान
समूह	विभाग	
लिंग के अनुसार	पुरुष	4.56
	महिला	4.68
कुल औसत मान		4.62

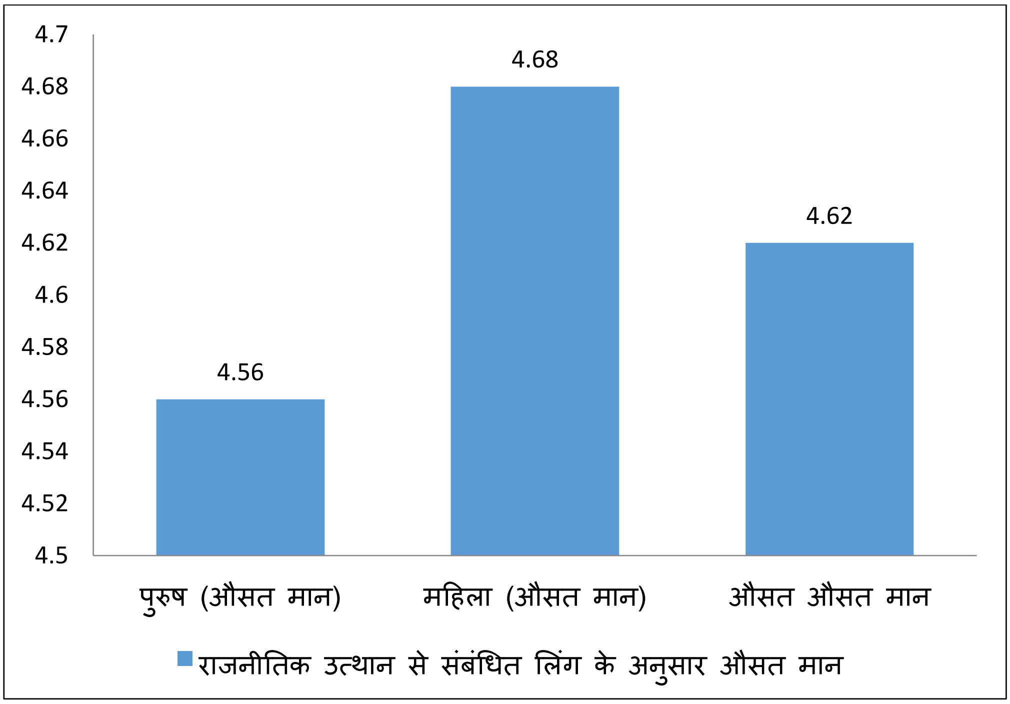

चित्र 3.1: राजनीतिक उत्थान से संबंधित लिंग के अनुसार औसत मान

Zaidatol और Bagheri (2009) के अनुसार, पाँच-बिंदु लाइकर्ट स्केल पर (जहाँ Strongly Disagree = 1, Disagree = 2, Neutral = 3, Agree = 2 तथा Strongly Agree = 5) प्राप्त प्रतिक्रियाओं का औसत मान यदि 3.39 या उससे कम हो, तो उसे निम्न स्तर (Low) की श्रेणी में रखा जाता है। इसी प्रकार, जब औसत मान 3.40 से 3.79 के बीच आता है, तो उसे मध्यम स्तर (Moderate) माना जाता है, जबकि 3.80 या उससे अधिक के औसत मान को उच्च स्तर (High) की श्रेणी में वर्गीकृत किया जाता है।

इस मापदंड (criterion) का उपयोग Zaidatol & Hisyamuddin (2009) और Zaidatol & Bagheri (2011) द्वारा किए गए शोधों में भी किया गया है।

सभी लिंग वर्गों के संदर्भ में 'राजनीतिक उत्थान' से संबंधित प्रश्नों पर प्राप्त उत्तरों का औसत मान 4.56 या उससे अधिक पाया गया। चूँकि लाइकर्ट स्केल पर 3.0 से ऊपर का औसत मान सकारात्मक माना जाता है, इसलिए यह स्पष्ट होता है कि लिंग के आधार पर उत्तरदाताओं की 'राजनीतिक उत्थान' संबंधी धारणा सकारात्मक है। साथ ही, यह उच्च स्तर को दर्शाता है, क्योंकि 4.56 का मान 3.79 से अधिक है।

इसके अतिरिक्त, लिंग के आधार पर समग्र औसत मान 4.62 पाया

गया, जो यह इंगित करता है कि सभी लिंग वर्गों के उत्तरदाताओं की धारणा केवल सकारात्मक ही नहीं है, बल्कि उसका स्तर भी *उच्च* है, क्योंकि 4.62 का मान 3.79 से अधिक है।
इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कोरबा क्षेत्र में अनुसूचित जाति एवं जनजाति समुदायों के राजनीतिक उत्थान में ननकीराम कँवर के योगदान को सकारात्मक रूप से स्वीकार किया गया है, तथा लिंग के आधार पर सभी उत्तरदाता इस धारणा से सहमत हैं।

3.4.2. शिक्षा के अनुसार

तालिका 3.3: राजनीतिक उत्थान से संबंधित शिक्षा के अनुसार औसत मान

समूह सांख्यिकी		औसतमान
समूह	**विभाग**	
शिक्षा के अनुसार	अशिक्षित	4.52
	10वीं तक	4.60
	10वीं से 12वीं तक	4.66
	स्नातक	4.69
	स्नातकोत्तर व उससे अधिक	4.73
कुल औसत मान		4.64

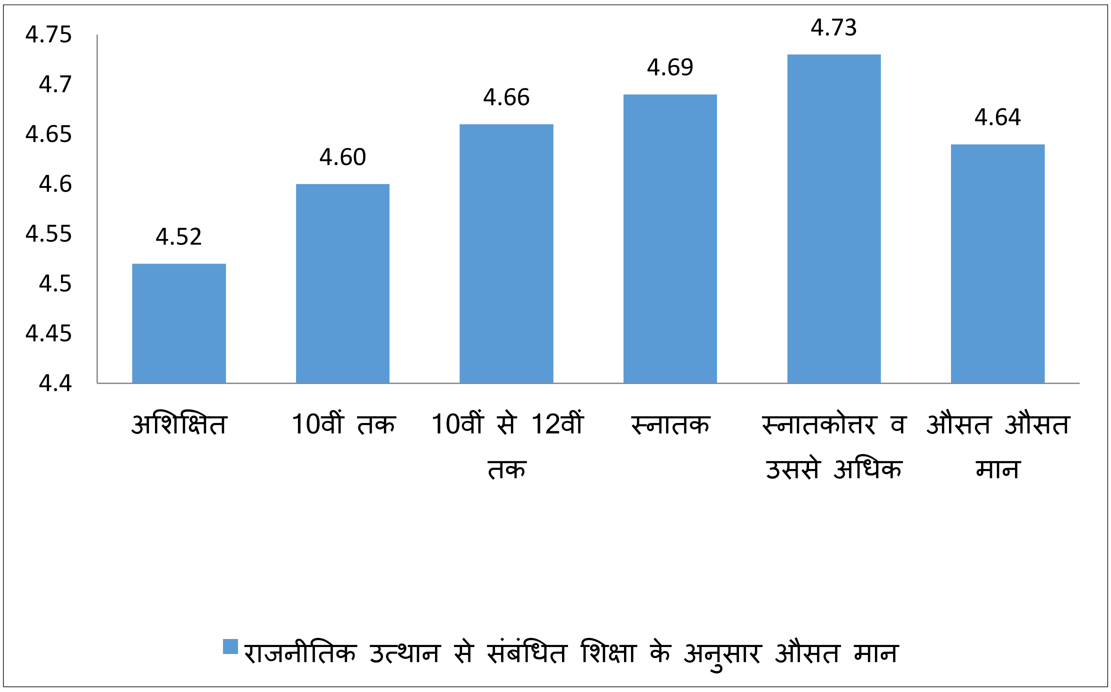

चित्र 3.2: राजनीतिक उत्थान से संबंधित शिक्षा के अनुसार औसत मान

शैक्षिक वर्गों के अनुसार 'राजनीतिक उत्थान' विषय से जुड़े प्रश्नों पर प्राप्त उत्तरों का औसत मान 4.52 या उससे अधिक पाया गया। चूँकि लाइकर्ट स्केल पर 3.0 से ऊपर का औसत मान सकारात्मक माना जाता है, इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा के आधार पर उत्तरदाताओं की 'राजनीतिक उत्थान' संबंधी धारणा सकारात्मक है। साथ ही, यह स्तर उच्च है क्योंकि 4.52 का मान 3.79 से अधिक है।
इसके अतिरिक्त, शिक्षा के आधार पर समग्र औसत मान 4.64 दर्ज किया गया, जो इंगित करता है कि सभी शैक्षिक वर्गों के उत्तरदाताओं की धारणा न केवल सकारात्मक है बल्कि उच्च स्तर की भी है, क्योंकि 4.64 का मान 3.79 से ऊपर है।
इससे यह स्पष्ट होता है कि कोरबा क्षेत्र में अनुसूचित जाति एवं जनजाति समुदायों के राजनीतिक उत्थान में ननकीराम कँवर की भूमिका को सकारात्मक रूप से अनुभव किया गया है तथा शिक्षा के आधार पर सभी उत्तरदाता इस धारणा से सहमत हैं।

3.4.3. आय वर्ग के अनुसार

तालिका 3.4: राजनीतिक उत्थान से संबंधित लिंग के अनुसार औसत मान

समूह सांख्यिकी		औसतमान
समूह	**विभाग**	
आय वर्ग के अनुसार (प्रति माह)	₹15,000/- तक	4.51
	₹15,001 – ₹30,000/-	4.59
	₹30,001 – ₹45,000/-	4.65
	₹45,000/- से अधिक	4.68
कुल औसत मान		4.61

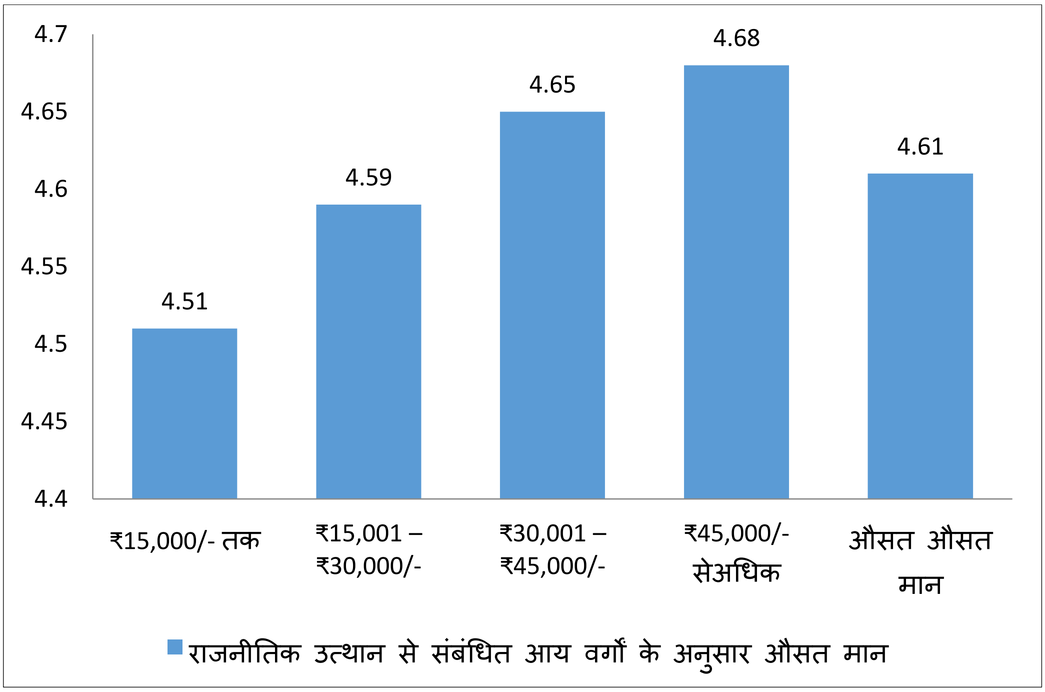

चित्र 3.3: राजनीतिक उत्थान से संबंधित आय वर्गों के अनुसार औसत मान

सभी आय वर्गों के संदर्भ में 'राजनीतिक उत्थान' विषय से जुड़े प्रश्नों पर प्राप्त उत्तरों का औसत मान 4.51 या उससे अधिक दर्ज किया गया। चूँकि लाइकर्ट स्केल पर 3.0 से ऊपर का औसत मान सकारात्मक माना जाता है, इसलिए यह स्पष्ट है कि आय के आधार पर उत्तरदाताओं की 'राजनीतिक उत्थान' संबंधी धारणा सकारात्मक है। साथ ही, यह उच्च स्तर को इंगित करता है, क्योंकि 4.51 का मान 3.79 से अधिक है।

आय के आधार पर प्राप्त समग्र औसत मान 4.61 रहा, जो दर्शाता है कि सभी आय वर्गों के उत्तरदाताओं की धारणा न केवल सकारात्मक है, बल्कि उसका स्तर भी *उच्च* है, क्योंकि 4.61 का मान 3.79 से ऊपर है। अर्थात, कोरबा क्षेत्र में अनुसूचित जाति एवं जनजाति समुदायों के राजनीतिक उत्थान में ननकीराम कँवर के योगदान को सकारात्मक रूप से स्वीकार किया गया है और आय के आधार पर सभी उत्तरदाता इस धारणा से सहमत हैं।

4. अध्ययन के निष्कर्ष, सीमाएँ, व्यवहारिक सुझाव एवं भविष्य में अध्ययन की संभावनाएँ

4.1. निष्कर्ष

यह अध्ययन स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि ननकीराम कँवर ने छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में अनुसूचित जाति एवं जनजातियों के राजनीतिक-सामाजिक एवं आर्थिक उत्कर्ष में महती भूमिका निभाई है, साथ ही उन्होंने अनुसूचित जनजाति के राजनीतिक उत्थान और सशक्तिकरण के लिए उल्लेखनीय कार्य किए। उनके कार्यकाल में इन समुदायों की समस्याओं को उनके राजनीतिक कार्यालय में गंभीरता से सुना गया और समाधान हेतु पहल की गई। उन्होंने समुदाय को राजनीतिक प्रतिनिधित्व देने तथा उन्हें निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में शामिल करने के लिए निरंतर प्रयास किया। कँवर जी ने न केवल लोगों को राजनीतिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया, बल्कि अपने कार्यकाल में समुदाय को राजनीतिक महत्व भी दिलाया। साथ ही, उन्होंने अपनी राजनीतिक दल के लोकतान्त्रिक अभियानों के प्रचार-प्रसार में इन समुदायों को शामिल कर उन्हें राजनीतिक शिक्षा और जागरूकता प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया। उनकी नीतियाँ जनजातीय एवं दलित समुदाय के हित में रही, जिससे राजनीतिक जागरूकता और आत्मविश्वास दोनों में वृद्धि हुई।

प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने ननकीराम कँवर के राजनीतिक योगदान को सकारात्मक दृष्टि से देखा है। लिंग, शिक्षा स्तर और आय वर्ग जैसी विभिन्न श्रेणियों से संबंधित उत्तरदाताओं ने उनके प्रयासों को सराहा है। प्रत्येक श्रेणियों में समग्र औसत मान बहुत अधिक पाया गया, जो दर्शाता है कि उनकी भूमिका को व्यापक स्तर पर जनसमुदाय की स्वीकृति प्राप्त हुई है।

समग्र रूप से अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि ननकीराम कँवर का योगदान कोरबा जिले के अनुसूचित जाति एवं जनजाति समुदायों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सहायक सिद्ध हुआ है। उनके प्रयासों ने न केवल राजनीतिक समावेशिता को बढ़ावा दिया,

बल्कि समुदाय में लोगों की आत्मनिर्भरता व आत्मविश्वास में वृद्धि कर उनकी राजनीतिक जागरूकता को भी सशक्त किया।

4.2. अध्ययन की सीमाएँ
इस अनुभाग में अध्ययन की मुख्य सीमाओं को उजागर किया गया है, जिनमें शामिल हैं:

- **भौगोलिक सीमा:** यह शोध केवल छत्तीसगढ़ राज्य के कोरबा जिले तक सीमित रहा, इसलिए इसके परिणामों को अन्य जिलों या राज्यों पर सीधे लागू नहीं किया जा सकता।
- **प्राथमिक आंकड़ों पर निर्भरता** – यह शोध मुख्य रूप से सर्वेक्षण और साक्षात्कार पर आधारित है, जिसके कारण प्रतिभागियों की राय समय, परिस्थितियों और व्यक्तिगत अनुभवों से प्रभावित हो सकती है।
- **मूल्यांकन का स्वरूप –** अध्ययन में प्रयुक्त प्रश्नावली में प्राप्त प्रतिक्रियाएँ मुख्यतः आत्म-रिपोर्टिंग पर आधारित थीं, जिससे पक्षपात की संभावना बनी रहती है।
- **विषयगत सीमा** – यह अध्ययन केवल ननकीराम कँवर के सामाजिक योगदान पर केंद्रित है; उनके राजनीतिक, प्रशासनिक या अन्य क्षेत्रों में योगदान इस शोध में शामिल नहीं किया गया है।

4.3. व्यवहारिक सुझाव
- **राजनीतिक नेतृत्व में भागीदारी बढ़ाई जाए:** जनजातीय युवाओं और महिलाओं को पंचायत से लेकर विधानमंडल तक सक्रिय भागीदारी के लिए प्रोत्साहित किया जाए, जिससे वे निर्णय-प्रक्रिया का हिस्सा बन सकें।
- **राजनीतिक प्रशिक्षण एवं नेतृत्व विकास कार्यक्रम:** जनजातीय क्षेत्रों में नेतृत्व कौशल, राजनीतिक जागरूकता तथा संवैधानिक अधिकारों से संबंधित प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाएँ, ताकि समुदाय में सक्षम नेता तैयार हो सकें।
- **राजनीतिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जाए:** विभिन्न निर्वाचित निकायों (ग्राम पंचायत, नगर पालिका, विधानसभा एवं संसद) में अनुसूचित जाति/जनजाति समुदाय का पर्याप्त प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी कदम उठाए जाएँ।
- **जनजातीय मुद्दों को मुख्यधारा की राजनीति में शामिल किया जाए:** राजनीतिक दलों को चाहिए कि वे अपने घोषणापत्र एवं नीतियों में जनजातीय समाज की समस्याओं, आवश्यकताओं और अधिकारों को प्राथमिकता दें।
- **राजनीतिक जागरूकता अभियान चलाए जाएँ:** मतदान के अधिकार, राजनीतिक भागीदारी और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की समझ बढ़ाने हेतु जनजातीय क्षेत्रों में नियमित राजनीतिक जागरूकता अभियान चलाए जाएँ।
- **स्थानीय नेतृत्व को सशक्त किया जाए:** ननकीराम कँवर जैसे जननायकों की कार्यशैली और राजनीतिक योगदान को आदर्श बनाकर स्थानीय नेताओं को सशक्त किया जाए, ताकि वे अपने समुदाय के लिए प्रेरणास्रोत बन सकें।
- **जनजातीय समुदाय की नीति-निर्माण प्रक्रिया में भागीदारी:**

राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर नीति-निर्माण समितियों में जनजातीय प्रतिनिधियों को शामिल किया जाए, ताकि उनके हित सीधे रूप से संरक्षित हों।

4.4. भविष्य के अध्ययन की दिशा
इस भाग में बताया गया है कि भविष्य में इसी विषय पर किन-किन पहलुओं पर आगे शोध किया जा सकता है।

- इस अध्ययन को अन्य जिलों या पूरे छत्तीसगढ़ में विस्तारित किया जा सकता है।
- राजनीतिक उत्थान के अन्य पहलुओं जैसे राजनीतिक भागीदारी, प्रशासनिक प्रभाव आदि को भी शामिल किया जा सकता है।
- अतीत और वर्तमान शासन की योजनाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने की संभावनाएँ भी मौजूद हैं।

5. संदर्भ सूची

1. देशमुख आर. महाराष्ट्र में स्थानीय निकाय चुनाव और जनजातीय भागीदारी. जर्नल ऑफ पॉलिटिकल स्टडीज. 2016;22(3):145-60.
2. भारत सरकार. भारत का संविधान (106वें संशोधन तक संशोधित). नई दिल्ली: विधि और न्याय मंत्रालय; 2023. उपलब्ध: https://legislative.gov.in
3. भारत सरकार. अनुसूचित जनजातियों की सामाजिक-राजनीतिक स्थिति पर वार्षिक रिपोर्ट. नई दिल्ली: जनजातीय कार्य मंत्रालय; 2020.
4. शर्मा आर. भारत में वंचित समुदायों का राजनीतिक सशक्तिकरण: अनुसूचित जनजातियों की भागीदारी और प्रतिनिधित्व का अध्ययन. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स; 2017.
5. कोरबा जिला प्रशासन. कोरबा जिला: औद्योगिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य. रायपुर: छत्तीसगढ़ शासन; 2023. उपलब्ध: https://korba.gov.in
6. कुमार ए, वर्मा एस. राजनीतिक सशक्तिकरण में जनजातीय संगठनों की भूमिका: झारखंड का एक अध्ययन. इंडियन जर्नल ऑफ सोशल एंड पॉलिटिकल साइंस. 2019;34(2):55-72.
7. मिश्र पी. बिहार में जनजातीय नेतृत्व का उद्भव: क्षेत्रीय दल और प्रतिनिधित्व. जर्नल ऑफ इंडियन पॉलिटिक्स. 2015;19(1):101-18.
8. ननली जेसी. मनोमितिक सिद्धांत. द्वितीय संस्करण. मैक्ग्रा-हिल; 1978.
9. पट्नायक बी. ओडिशा की जनजातीय पंचायतों में महिला और युवाओं की भागीदारी. कॉन्टेम्परारी सोशल साइंस रिव्यू. 2022;28(4):233-50.
10. पाण्डेय एमके. छत्तीसगढ़ में जनजातीय नेतृत्व का विकास: ननकीराम कँवर का अध्ययन. भारतीय राजनीति समीक्षा. 2023;12(2):45-52.
11. प्रधान एम. जनजातीय पंचायतों में महिलाओं का सांकेतिक प्रतिनिधित्व: ओडिशा का परिप्रेक्ष्य. गवर्नेंस एंड सोसाइटी. 2018;12(2):67-83.
12. राव के. आंध्र प्रदेश में जनजातीय प्रतिनिधित्व और नीतिनिर्माण. साउथ एशियन पॉलिटिकल रिव्यू. 2020;27(1):89-104.
13. रॉय ए. उत्तर-पूर्व भारत में स्वायत्त परिषदें और जनजातीय स्वशासन. एशियन जर्नल ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज़. 2014;15(3):201-19.
14. शुक्ला वी. छत्तीसगढ़ में जनजातीय राजनीतिक नेतृत्व: राज्य गठनोत्तर परिदृश्य. जर्नल ऑफ गवर्नेंस एंड डेवलपमेंट.

2019;17(2):45-62.
15. सिंह सीएम, दीक्षित आई, चंद्रा ए. छत्तीसगढ़ के अभियंत्रण संस्थानों के शिक्षकों में गुणवत्ता संबंधी पहलुओं का अध्ययन. आईओएसआर जर्नल ऑफ बिज़नेस एंड मैनेजमेंट. 2017;19(9):68-71.
16. सिंह केएस. अनुसूचित जनजातियाँ. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2014.
17. तिवारी आर, सेन एम. मध्य भारत में जनजातीय राजनीतिक जागरूकता और सहभागिता. इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस. 2021;76(1):25-39.
18. जाजा वी. भाषा, धर्म और पहचान की राजनीति: भारत में जनजातियाँ. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली. 2005;40(13):1363-70.
19. यादव के. मध्य प्रदेश की जनजातीय समुदायों में राजनीतिक सशक्तिकरण की बाधाएँ. जर्नल ऑफ रूरल एंड ट्राइबल स्टडीज़. 2017;9(1):33-48.
20. जायदातोल एएलपी, बघेरी ए. करियर विकल्प के रूप में उद्यमिता: विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की उद्यमशील आत्म-प्रभावकारिता और अभिप्रेरणा का विश्लेषण. यूरोपियन जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज़. 2009;9(2):338-46.

How to Cite This Article

Dwivedi P, Pandey MK. जनजातियों के राजनीतिक उत्थान में ननकीराम कँवर का योगदान (छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले के विशेष सन्दर्भ में). Journal of Frontiers in Multidisciplinary Research. 2025;6(2):405-412. doi:10.54660/.JFMR.2025.6.2.405-412.

Creative Commons (CC) License

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International (CC BY-NC-SA 4.0) License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work non-commercially, as long as appropriate credit is given and the new creations are licensed under the identical terms.